हदीसे किसा मंज़ूम

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम

फरमाती हैं यह बिन्ते रसूल फ़लक वेकार
यानी जनाबे फ़ातिमा ख़ातूने रोजगार
एक रोज आये घर मेरे महबूबे ज़ुल-जलाल
फ़रमाया मेरा जोफ़ से कुछ है बदन निढाल
की मैंने उनसे अर्ज कि ऐ मेरे बाबा जान
हजरत के ज़ोफ़ से रहे ख़ालिक निगेहबान
फ़रमाया फिर यह सरवरे गरदूं मुकाम ने
ख़त्मुर-रुसुल जनाबे रिसालत मआब ने

हजरत
मोहम्मद सल० इब्ने अब्दुल्लाह
विलादत- १७ रबी-उल-अव्वल
शहादत- २८ सफ़र ११ हिजरी

ऐ फ़ातिमा ! रिदाए यमानी उठा तो लाओ
सर ता कदम मुझे उसे अच्छी तरह उढ़ाओ
फ़रमाती है यह फ़ातिमये-आसमां मुकाम
नाजिल हमेशा उनपा हो अल्लाह का सलाम
चादर वह ले के खिदमते अकदस में आ गई
और हस्बे हुक्म उनको वह चादर उढ़ा भी दी
चादर उढ़ा के उनकी तरफ़ देखने लगी
नागाह वह देखी रूए मुनव्वर में रोशनी
धोका निगाह को हो यह आलम था नूर का
है चौधवीं का चाँद कि चेहरा हुजूर का (सल०)

फिर यूँ जनाबे फ़ातिमा फ़रमाती हैं क्यों
थोड़ी ही देर गुज़री थी इसको कि नागहाँ
मेरा पिसर हसन मेरे नज़दीक आन कर
बोला मेरा सलाम हो ऐं अम्मा आप पर
मैंने दिया जवाब कि ऐ मेरे बाबा जान
ऐ नूरे-चश्म, मेवऐ-दिल तुमपा भी सलाम
फिर मुझसे यू वह कहने लगी पार-ए-जिगर
खुशबू नफीस पाती हू मैं इस मक़ाम पर
अम्बर की यह महक है न मुश्को गुलाब की
खुशबू हो जैसे नाना रिसालत-मआब की

हज़रत
फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद सल्ल०
विलादत-20 जमादुल आख़िर
शहादत- 3 जमादुल आख़िर

पहले इमाम
ह. अली इब्ने अबी तालिब अलै.
विलादत- १३ रजब ३० आमुलफील
शहादत- २१ रमज़ान ४० हिजरी

मैंने दिया जवाब कि हां तुमने सच कहा
आराम में हैं जेरे-रिदा सय्यदुलवरा
चादर के पास जाके हसन ने किया कलाम
नाना मेरे रसूले खुदा आप पर सलाम
इस दम अगर हुजूर इजाजत हो आप की
चादर के नीचे आऊँ मएयत हो आप की
फरमाया मुस्तफा ने इजाजत है जाने-मन
दाखिल तहे-रिदा हुए यह सुनते ही हसन(स.)
फरमाती हैं यह दुख्तरे सुल्ताने मशरेकैन
इतने में आ गया मेरा छोटा पिसर हुसैन

दूसरे इमाम
हज़रत हसन इब्ने अली अलै.
विलादत- १५ रमज़ान ३ हिज्री
शहादत- २८ सफ़र ५० हिज्री

आकर कहा कि अम्मा मेरा आप पर सलाम
मैं बोली तुझपा ऐ मेरे लख़्ते-जिगर सलाम
बाद इसके फिर हुसैन ने इस तरह से कहा
अम्मां मुझे वह आती है ख़ुशबूए जाँफ़ेजा
नसरी की बू है और न यह नस्तरन की बू
यह तो है जैसे नाना रसूले-ज़मन की बू
मैंने कहा यह उससे कि ऐ मेरे गुलबदन
हाँ ! सामने वह देखो तहे चादरे यमन
प्यारे के नाना जान रसूले ज़मन भी हैं
और उनके साथ भाई तुम्हारे हसन भी हैं

यह सुनते ही हुसैन बढ़े जानिबे रिदा
कि अर्ज़ अस्सलाम-अलैक ऐ शहे-हुदा
फिर हो सलाम आप पर ऐ शाहे अम्बिया
ऐ वह कि मुन्तख़िब जिसे अल्लाह ने किया
क्या मुझको इज़्न है कदम आगे बढ़ाऊँ मैं
नजदीक आप लोगों के चादर में आऊँ मैं
फ़रमाया मुस्तफा ने कि हाँ इज़्न है मेरा
यह सुनते ही हुसैन हुए दाखिल रिदा (सल)
फ़रमाती हैं यह दुख़तरे पैगम्बरे ज़मन
तशरीफ़ लाए घर में यका-यक अबुल-हसन

चौथे इमाम
हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलै०
विलादत- १५ जमादुल अव्वल ३८ हि
शहादत- २५ मोहर्रम ९५ हिज्री

बोले सलाम तुमपा हो ऐ दुख्तरे रसूल
मैं ने कहा सलाम मेरा कीजिए कुबूल
नफ्से रसूल हैदरे कर्रार अस्सलाम
ऐ मोमिनीन के हाकिम सरदार अस्सलाम
मुझसे कहा अली ने कि ऐ बिन्ते मुस्तफा
आती है ऐसी महकते-पाकीजा दिल-रुबा
खुशबू निसार इस पा हो हर एक फूल की
यह है शमीमे जिस्म जनाबे रसूल की
की मै ने अर्ज हजरते खैरुल-बशर भी हैं
चादर के नीचे आपके दोनो पिसर भी हैं

पाँचवें इमाम
मो. बाक़िर इब्ने सै. सज्जाद
विलादत- १ रजब ५७ हिज्री
शहादत- ७ ज़िलहिज्ज ११४ हि.

बस जानिबे-किसाए यमानी गए अली
और बोले अस्सलाम-अलैक अय्योहन-नबी
ऐ वह की जिसको चुन लिया परवरदिगार ने
क्या आऊँ इस रिदा के तले इज्न है मुझे?
फरमाया मुस्तफा ने इजाजत तुम्हे भी दी
यह सूनते ही शरीक-रिदा होगए अली (सल.)
फरमाती हैं यह हजरते सिद्दीकह फातिमा
इन सब के बाद मैं भी गई जानिबे-रिदा
कि अर्ज आप पर हो सलाम ऐ मेरे पदर
यानी मेरा सलाम खुदा के रसूल पर

छठे इमाम
जाफ़रे सादिक़ इब्ने मो. बाक़िर
वि.- १७ रबीउलअव्वल ८३ हि.
शहादत- १५ शव्वाल १४८ हि.

सरदारे दो जहाँ का अगर इज्न पाऊँ मैं
नजदीक आप लोगों के चादर में आऊँ मैं
फरमाया मुस्तफ़ा ने तुम्हें इज्न दे दिया
दाख़िल हुई रिदा में यह सुनते ही फ़ातिमा (स.)
फ़रमाती हैं यह फ़ातिमा बिन्ते रसूले-रब
चादर तले जब आ गए हम लोग सब के सब
उस दम कहा फ़रिश्तों से परवर-दिगार ने
हाँ सुनलो बसने वालो मेरे आसमान के
मुझको क़सम है अपनी बुज़ुर्गी व शान की
क़ायम जो मैंने की है बिना आसमान की

सातवें इमाम

मूसिये काज़िम इब्ने जाफ़र अ.

विलादत- ७ सफ़र १२८ हि.

शहादत- २५ रजब १८३ हि.

और फ़र्श जो ज़मीं का बिछा है ब-हुक्मे रब
या मेहरो-मैह दिखाते हैं जलवे जो रोज़ो-शब
या रात दिन जो रहते हैं चक्कर में आस्माँ
बहरे-रवाँ और उनमें जो चलती है कशतियाँ
इन सब के खल्क का है सबब इश्क़ पन्जतन
इस दम जो मुज्तमा है तहे चादरे-यमन (सल.)
पूछा यह जिब्राईल ने बा इज्जो इन्केसार
चादर के नीचे कौन हैं ऐ मेरे किरदेगार
अल्लाह ने कहा कि नबूवत के अहलेबैत
वह सब के सब हैं खास रिसालत के अहलेबैत

आठवें इमाम
अली रिज़ा इब्ने काज़िम अलै.
विलादत- ११ ज़ीक़ाद १५३ हि.
शहादत- २२ ज़ीक़ाद २०३ हि.

वज्ह बिनाए अर्ज़ो–समाँ नूरे–मशरेकैन
ज़हरा व मुस्तफ़ा व अली और हसन हुसैन (सल.)
जिब्राईल ने कहा कि इजाज़त मिले अगर
साथ उनके मैं छटा हूँ पहुँच कर ज़मीन पर
अल्लाह ने कहा कि तुझे इज़्न दे दिया
उत्तरे अभी ज़मीं पर चले जानिबे किसा
बोले सलाम आप पा ऐ मुरसले ख़ुदा
ऐ वह कि मुन्तख़िब जिसे अल्लाह ने किया
जो है सलाम उसका भी है तोहफ़ए सलाम
और बाद सद तहय्यतो–इकराम यह पयाम

यानी बलन्दो-पस्त व मंहो - मेहेर व अस्माँ
बहरे रवाँ और उसमें जो चलती हैं कश्तियाँ
यह सब बनाए मैं ने तुम्हारे ही वास्ते
पैदा किया तुम्हारी मोहब्बत की वजह से
और मुझको इज्न है मेरे परवर-दिगार का
मैं भी हूँ आप लोगो में शामिल तहे रिदा
इज्ने खुदा तो मिल चुका अब कहिये या नबी
मैं भी रिदा में जाऊँ 'इजाजत है आप की'
फरमाया मुस्तफा ने कि हाँ इज्न है मेरा
यह सुन के जिब्राईल हुए दाखिल रिदा (सल.)

नाम इमाम
म. तकी इब्ने अली रिज़ा अलैहि.
विलादत- १० रजब १९५ हिज्री
शहादत- २९ ज़ीक़ाद २२० हि.

दसवें इमाम
मो. नकी इब्ने मो. तकी अ.
विलादत- ५ रजब २१४ हिजरी
शहादत- ३ रजब २५४ हिजरी

जाकर रिदा में हक्के अमानत अदा किया
मुझे खुदा ने भेजा था जो वह सब सुना दिया
की अर्ज़ आप लोगों से कहता है किबरिया
ऐ अहले-बैत बस है यही अल्लाह चाहता।
'हर एक ऐब तुम से हटाए ख़ुदाए-पाक
जो हक है पाक करने का ऐसा बनाये पाक' (सल)
उस वक्त मुस्तफ़ा से अली ने किया सवाल
मुझसे बयान कीजिए महबूबे ज़ुल-जलाल
इस दम जो है नशिस्त हमारी तहे रिदा
अल्लाह की नज़र में है क्या इसका मतलबा

जिस वक्त यह सवाल किया बूतुराब ने
फ़रमाया यूँ जनाबे रिसालत मआब ने
खाकर क़सम मैं कहता हूँ उस किरदार की
जिसने मुझसे बनाया है पैगम्बरो - नबी
अहले जमीं की कोई भी महफ़िल हो सुन रखो
जिस मे हमारे दोस्तों का एक गिरोह हो
और वाँ पर इस खबर का किया जाए तजकेरा
होगा नुजूल रहमते परवर-दिगार का (सल.)
जब तक कि मुन्तशिर न वह हो जाएँ सब के सब
घेरे रहेंगे उनको मलाएक बहुक्मे-रब

हदी.- ८ रबीउलअव्वल २६० हि.
...ग़ाफ़िर २३२ हि.

बारहवें इमाम
इ. मेंहदी इब्ने हसन अस्करी अ.
विलादत- १५ शाबान २५६ हि.
अतालल्लाह बक़ाएही

शिरकत का अपनी हक यह अदा करते जायेंगे
उन सब की मग़फ़िरत की दुआ करते जायेंगे
उस दम कहा अली ने कि अल्लाह की क़सम
अब तो सईद हो गये और कामयाब हम
यों ही हमारे शिया हमारे हबीब भी
मसऊद नेक बख़्त हुये खुश नसीब भी (सल.)
इज़हार जब खुशी का किया बूतूराब ने
फ़रमाया फिर जनाबे रिसालत मआब ने
उसकी क़सम है जिसने बनाया मुझे नबी
जिसकी तरफ़ से मुझको रिसालत अता हुई

हज़रत
अब्बास इब्ने अली अलैहिस्सलाम
विलादत- १७ शाबान
शहादत- १० मोहर्रम ६१ हिज्री

शियों की बज़्म में जो बयाँ होगी यह खबर
फ़ज़्ले खुदा से होगा अयाँ उसका यह असर
जो दर्दो-गम के मारे हों मसरूर होयेंगे
रन्जो-मलाल सुनते ही सब दूर होयेंगे
जो हो मुराद वाला मुराद अपनी पाएगा
हर एक उदास बज़्म से खुश होके जायेगा (सल)
फरमाया मुर्तुज़ा ने कि वल्लाह ऐ हुजूर
हम जिस तरह सआदते दारैन पा गये
शिया भी यूँ ही दामने रहमत में आ गए

✹

दुआए-मुतरज्जिम

या रब बे हक्के अहमदे मुख़्तारे मुस्तफा।
या रब बे हक्के हैदरे-कर्रार मुर्तुजा।
या रब बे हक्के सैय्यदा मासूमा फातेमा।
या रब बे हक्के सैय्यदे मस्मूमे मुज्तबा।
या रब बे हक्के सिब्ते नबी शाहे मशरेकैन
तश्ना दहन मुसाफिरे करबोबला हुसैन
जिस बज़्म में यह नज़्म पढी जाए ऐ खुदा।
हरएक सुनने वाले का हासिल हो मुदुदुआ (सल.)

मज़हबी मालूमात के लिये
जानकारी है कि अरबी व उर्दू खुद
पढ़ें और बच्चों को पढ़ायें